इन सब साधनों और सतर्कताओं का पूर्ण पालन वही कर सकता है जो साक्षात् कृष्णभावना से युक्त हो, क्योंकि कृष्णभावनामृत का अर्थ आत्मोत्सर्ग है। ऐसे त्याग में विषयों के संग्रह की सम्भावना नहीं रहती। श्रील रूप गोस्वामिचरण ने कृष्णभावनामृत की व्याख्या इस प्रकार की है:

**अनासक्तस्य विषयान् यथार्हमुपयुञ्जतः।**
**निर्बन्धः कृष्णसंबन्धे युक्तं वैराग्यमुच्यते।।**
**प्रापञ्चिकतया बुद्ध्या हरिसम्बन्धिवस्तुनः।**
**मुमुक्षुभिः परित्यागो वैराग्यं फल्गु कथ्यते।।**

'पदार्थासक्ति से बिल्कुल मुक्त होने पर भी जो पुरुष श्रीकृष्ण से सम्बन्धित, अर्थात् श्रीकृष्ण की सेवा के लिए किसी भी वस्तु को स्वीकार कर लेता है, उसी का वैराग्य सच्चा है। दूसरी ओर, जो श्रीकृष्ण से उनका सम्बन्ध जाने बिना सब पदार्थों को त्याग देता है, उसका वैराग्य तुच्छ है। (भक्तिरसामृतसिन्धु, २.२५५-२५६)

कृष्णभावनाभावित भक्त भलीभाँति जानता है कि सब पदार्थ श्रीकृष्ण की सम्पत्ति हैं। इस कारण वह स्वामीपन के भाव से सदा मुक्त रहता है। अपने लिए उसे किसी भी पदार्थ की लालसा नहीं रहती। कृष्णभावनामृत के अनुकूल वस्तुओं को ग्रहण करने और प्रतिकूल वस्तुओं को त्यागने की परिपाटी में वह कुशल होता है; नित्य योगी होने के रूप में विषयभोगों के प्रति सदा उदासीन रहता है और कृष्णभावनाशून्य व्यक्तियों से कोई प्रयोजन न होने से नित्य एकान्तवास करता है। इस सबसे स्पष्ट है कि कृष्णभावनाभावित भक्त पूर्ण योगी है।

**शुचौ देशे प्रतिष्ठाप्य स्थिरमासनमात्मनः।**
**नात्युच्छ्रितं नातिनीचं चैलाजिनकुशोत्तरम्।।११।।**
**तत्रैकाग्रं मनः कृत्वा यतचित्तेन्द्रियक्रियः।**
**उपविश्यासने युञ्ज्याद्योगमात्मविशुद्धये।।१२।।**

**शुचौ**=पवित्र; **देशे**=भूमि में; **प्रतिष्ठाप्य**=स्थापित करके; **स्थिरम्**=दृढ़; **आसनम्**=आसन; **आत्मनः**=आत्मनिर्भर; **न**=न; **अति**=अधिक; **उच्छ्रितम्**=ऊँचा; **न**=न; **अति**=अति; **नीचम्**=नीचा; **चैलाजिन**=मृदु वस्त्र एवं मृगछाल; **कुशोत्तरम्**=कुशा; **तत्र**=उस पर; **एकाग्रम्**=एकाग्र; **मनः**=मन को; **कृत्वा**=करके; **यतचित्तेन्द्रियक्रियः**=चित्त और इन्द्रियों की क्रिया को वश में करके; **उपविश्य**=बैठकर; **आसने**=आसन पर; **युञ्ज्यात्**=अभ्यास करे; **योगम्**=योग का; **आत्म**=हृदय की; **विशुद्धये**=शुद्धि के लिए।

### अनुवाद

योगाभ्यास के लिए एकान्त में जाकर भूमि पर क्रमशः कुशा, मृगछाल तथा मृदु